B.A. Part-1 Hindi Hons के विद्यार्थियों के लिए

'कानों में कंगना' शीर्षक कहानी की समीक्षा का शेष भाग

समीक्षक- डॉ० सतीश चन्द्र पाठक, हिन्दी विभाग,
ए०एन०एस० कॉलेज, जहानाबाद।

पात्र - 'कानों में कंगना' शीर्षक कहानी के पात्रों की संख्या सीमित है जो कहानी कला की एक आवश्यक शर्त है। नरेन्द्र इस कहानी का प्रधान पात्र अथवा कथानायक है। पूरी कहानी उसी के साथ चलती है। यदि ~~यह~~ यह कहा जाए कि इस कहानी की समस्त घटनाएं उसके भौतिक जीवन तथा मानसिक स्तर पर घटित होती हैं। उसी के प्रवेश के साथ कहानी आरंभ होती है और उसी की संवेदना में कहानी अपनी पूर्णता पूरी करती है। नरेन्द्र यद्यपि व्यक्तिगत है किन्तु उसकी वैयक्तिकता में ~~सामूह~~ पुरुषों के सामूहिक चरित्र के दर्शन भी होते हैं। युग-युग से नारी, पुरुष के आकर्षण का केन्द्र रही है। आकर्षण जब प्रेम में रूपांतरित होता है तब जीवन की दिशा बदलने लगती है। नरेन्द्र के जीवन में किरन का आगमन सहसा होता है। वह योगीराज के पास अपने आत्मिक ज्ञान की वृद्धि हेतु उनकी कुटिया में आना-जाना रहता है। वहीं सहसा उसकी दृष्टि किरन पर पड़ती है और उसके रूप, उसकी चपलता, उसकी सहजता और उसके भोलेपन पर ~~वह~~ रीझ जाता है। योगीराज की अनुभवी दृष्टि दोनों के हृदय में अंकुरित प्रेम के बीज को लक्ष्य करने में चूकती नहीं है। परिणाम स्वरूप ~~वे~~ किरन को नरेन्द्र के हाथों सौंप कर उसकी ओर से निश्चिन्त हो जाते हैं। नरेन्द्र का किरन के प्रति प्रेम प्रथम दृष्टि का प्रेम है, रूप एवं शारीरिक चेष्टाओं पर आधारित प्रेम है। कथाकार नरेन्द्र की मानसिक स्थितियों का निदर्शन भी करता चलता है। रूप आधारित प्रेम टिकाऊ नहीं होता। क्योंकि प्रेम तो रूप से होता है और रूप

प्रकृति के नियमानुसार क्रमशः कम होता जाता है। उसके साथ प्रेम भी कम होता जाता है। नरेन्द्र के जीवन में ठीक ऐसा ही होता है। नरेन्द्र एक दिन अपने मित्र के य नृत्य देखने जाता है। वह नर्तकी के रूप, रंग, हाव, भाव चापल्य इत्यादि पर ऐसा रीझता है कि किरण उसके सामने एकदम फीकी लगने लगती है। वह उसी नर्तकी का होकर रह जाता है। उसे रिझाने के लिए वह अपना सब कुछ उस पर लुटा देता है। किरण के समस्त आभूषण नर्तकी पर वार दिए जाते हैं। अन्तिम आभूषण भी जब किरण से नरेन्द्र माँगने जाता है तो उसे मिलता है वह कंगन जो हाथ में पहनने के स्थान पर उसने कानों के ऊपर रख छोड़े थे। नरेन्द्र के विश्वासघात को किरण सह नहीं पाती और उसके प्राण पखेरू उड़ जाते हैं। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप नरेन्द्र का अतीत साकार हो उठता है और ~~पछताकर रह जाता है~~ अपनी करनी पर आत्मग्लानि से नरेन्द्र भर उठता है पछताकर रह जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि नरेन्द्र का चरित्र रूपलोलुप एवं निरन्तर नवीन भोगों के पीछे दौड़ने वाले पुरुष का चरित्र है। उसमें सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक बंधनों के प्रति कोई आदर नहीं है। उसका चरित्र सामान्य चरित्र है उसमें कोई जटिलता नहीं है। कथान्त में वह अपने किए पर पछताता दिखता है जिससे उसकी सहज संवेदना की स्थिति पर प्रकाश पड़ता